



आदिवासी विद्यार्थियों का व्यक्तित्व निर्माण

कंचन कुमारी

मनोविज्ञान शोधार्थी, राधा गोविंद विश्वविद्यालय, रामगढ़.

शोध-सार

आदिवासी परिवार अपने बच्चों के व्यक्तित्व निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। वे बच्चों को ऐसे मूल्यों, परंपराओं और जीवन-कौशलों की मजबूत नींव प्रदान करते हैं, जो उनके पूरे जीवन में उनके व्यक्तित्व और व्यवहार को प्रभावित करते हैं। यद्यपि अनेक आदिवासी समुदाय गरीबी, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की कमी तथा सीमित संसाधनों जैसी चुनौतियों का सामना करते हैं, फिर भी उनका पारिवारिक वातावरण विद्यार्थियों के समग्र व्यक्तित्व विकास में सकारात्मक योगदान देता है। परिवार प्रत्येक बच्चे का पहला विद्यालय होता है। आदिवासी समुदायों में माता-पिता, दादा-दादी तथा परिवार के अन्य बुजुर्ग बच्चों को नैतिक मूल्य, दूसरों के प्रति सम्मान, ईमानदारी, अनुशासन और जिम्मेदारी का पाठ पढ़ाते हैं। बच्चे अपने परिवार के सदस्यों के दैनिक जीवन को देखकर तथा सामुदायिक गतिविधियों में भाग लेकर इन गुणों को सीखते हैं। आदिवासी विद्यार्थियों में व्यक्तित्व निर्माण के लिए एक समग्र और सांस्कृतिक रूप से संवेदनशील दृष्टिकोण की आवश्यकता होती है, जो आत्मविश्वास, संचार कौशल और नेतृत्व पर केंद्रित हो। इसके प्रमुख तरीकों में सहकर्मी-समूह गतिविधियाँ, भाषा की बाधाओं को दूर करना और सांस्कृतिक पहचान को आधुनिक कौशल-विकास के साथ जोड़ना शामिल हैं। विद्यार्थी किसी भी देश के भविष्य की नींव होते हैं, और उनका समग्र विकास शैक्षणिक उपलब्धि से कहीं आगे तक जाता है। आज की तेजी से बदलती दुनिया में, शिक्षा का केंद्र न केवल बौद्धिक विकास होना चाहिए, बल्कि व्यक्तित्व, चरित्र और नेतृत्व गुणों का विकास भी होना चाहिए। एक छात्र का व्यक्तित्व यह तय करता है कि वह दूसरों के साथ कैसे बातचीत करता है, उसका चरित्र उसके नैतिक मूल्यों को परिभाषित करता है, और नेतृत्व उसे अपने आस-पास के लोगों का मार्गदर्शन करने और उन्हें प्रेरित करने में सक्षम बनाता है। ये सभी तत्व मिलकर छात्रों को जिम्मेदार नागरिकों और कल के प्रभावी नेताओं में बदलने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।



मुख्य शब्द : वातावरण, ईमानदारी, सम्मान, व्यक्तित्व और बौद्धिक

परिचय

आदिवासी परिवारों के विद्यार्थियों का व्यक्तित्व निर्माण और मानसिक विकास एक बहुआयामी प्रक्रिया है, जो उनकी अनूठी सांस्कृतिक विरासत, सामाजिक-आर्थिक बदलावों, पारिवारिक गतिशीलता और आधुनिक शैक्षणिक अनुभवों से आकार लेती है। जहाँ एक ओर पारंपरिक रूप से आदिवासी समुदाय मजबूत सामुदायिक संबंध, लचीलापन और आत्मनिर्भरता को बढ़ावा देते हैं, वहीं दूसरी ओर औपचारिक मुख्यधारा की शिक्षा प्रणाली में प्रवेश करने वाले विद्यार्थियों को अपनी स्वदेशी जड़ों और आधुनिक सामाजिक अपेक्षाओं के बीच एक जटिल संतुलन बनाने की आवश्यकता होती है। व्यक्तित्व उन विचारों, भावनाओं, व्यवहारों और दृष्टिकोणों के अनूठे संयोजन को संदर्भित करता है जो एक व्यक्ति को दूसरे से अलग बनाते हैं। छात्र जीवन के दौरान, व्यक्तित्व विकास एक महत्वपूर्ण चरण पर होता है, क्योंकि युवा मन परिवार, शिक्षकों, सहपाठियों और आसपास वातावरण

से अत्यधिक प्रभावित होते हैं। आत्मविश्वास, संचार कौशल भावनात्मक बुद्धिमत्ता, अनुकूलनशीलता और आत्म-जागृति एक अच्छी तरह से विकसित व्यक्तित्व के महत्वपूर्ण पहलू हैं। शिक्षण संस्थान छात्रों के व्यक्तित्व को निखारने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। कक्षा की चर्चाएँ, समूह गतिविधियाँ, वाद-विवाद, प्रस्तुतियाँ और पाठ्येतर गतिविधियों में भागीदारी छात्रों को खुद को व्यक्त करने और डर या झिझक को दूर करने में मदद करती है। जब छात्रों को प्रश्न पूछने, राय साझा करने और स्वतंत्र रूप से सोचने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है, तो उनमें आत्मविश्वास और विचारों की स्पष्टता विकसित होती है। एक सकारात्मक व्यक्तित्व न केवल छात्रों को शैक्षणिक रूप से सफल होने में मदद करता है, बल्कि उन्हें लचीलेपन और आशावाद के साथ वास्तविक जीवन की चुनौतियों का सामना करने के लिए भी तैयार करता है। व्यक्तित्व विकास समय के साथ किसी व्यक्ति के चरित्र को निखारने, बदलने और आकार देने की प्रक्रिया है। यह किसी व्यक्ति की विशेषताओं, दृष्टिकोण और कार्यों को बेहतर बनाता है। इसमें आंतरिक और पर्यावरणीय कारकों का एक ऐसा संयोजन शामिल होता है जो किसी व्यक्ति के समग्र विकास को मजबूत करता है और उसे अपनी एक विशिष्ट पहचान स्थापित करने में मदद करता है। आदिवासी परिवार विद्यार्थियों को बचपन से ही आत्मनिर्भर बनने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। बच्चे प्रायः घर के कार्यों, खेती-बाड़ी, वन उत्पादों के संग्रह तथा अपने छोटे भाई-बहनों की देखभाल में सहयोग करते हैं। ये जिम्मेदारियाँ उनमें आत्मविश्वास, परिश्रम, नेतृत्व क्षमता तथा समस्या-समाधान कौशल का विकास करती हैं। प्रकृति के निकट रहकर जीवन बिताने से विद्यार्थियों में धैर्य, पर्यावरण के प्रति जागरूकता तथा प्राकृतिक संसाधनों के प्रति सम्मान की भावना भी विकसित होती है।

आदिवासी विद्यार्थियों में देखे जाने वाले प्रमुख व्यक्तित्व लक्षण

मनोवैज्ञानिक और सामाजिक अध्ययन (जैसे कि 'सिक्सटीन पर्सनैलिटी फैक्टर प्रश्नावली' का उपयोग करने वाले तुलनात्मक आकलन) गैर-आदिवासी साथियों की तुलना में आदिवासी युवाओं की कुछ विशिष्ट विशेषताओं को उजागर करते हैं:

- **भावनात्मक स्थिरता और नियंत्रण:** अनुसंधान अक्सर यह दर्शाता है कि आदिवासी विद्यार्थी भावनात्मक स्थिरता, संयम और व्यवहार नियंत्रण में उच्च स्कोर करते हैं, जिसकी जड़ें मुख्य रूप से सामुदायिक जीवन शैली और प्रकृति के करीब रहने में समाहित हैं।
- **आत्मनिर्भरता और साहस:** ऐसे वातावरण में बड़ा होना जो अक्सर शारीरिक संसाधनशीलता और सहयोग की मांग करता है, बच्चों में स्वतंत्रता, आत्म-विश्वास और शारीरिक-धसामाजिक साहस की एक मजबूत भावना विकसित करता है।
- **प्रामाणिकता और ईमानदारी:** आत्म-अवधारणा और आत्म-प्रकटीकरण पर किए गए अध्ययनों से पता चलता है कि आदिवासी छात्र अक्सर उच्च स्तर की सच्चाई और अभिव्यक्ति में स्पष्टता प्रदर्शित करते हैं, हालांकि उन्हें शहरी परिवेश में शुरुआत में औपचारिक संचार की घबराहट या झिझक का सामना करना पड़ सकता है।

स्कूल में व्यक्तित्व विकास

व्यक्तित्व विकास उस प्रक्रिया को संदर्भित करता है जिसके माध्यम से छात्र आत्मविश्वास, संचार कौशल (कम्युनिकेशन स्किल्स), नेतृत्व क्षमता, भावनात्मक बुद्धिमत्ता (इमोशनल इंटेलिजेंस) और सकारात्मक दृष्टिकोण जैसे महत्वपूर्ण गुण विकसित करते हैं। एक स्कूली माहौल में, व्यक्तित्व विकास निम्नलिखित अनुभवों के संयोजन के माध्यम से होता है:

कक्षा में सीखना, समूह चर्चा, पाठ्येतर गतिविधियाँ (एक्स्ट्रा करिकुलर एक्टिविटीज), नेतृत्व कार्यक्रम, सहपाठियों और शिक्षकों के साथ सामाजिक अंतःक्रिया ये अनुभव छात्रों को खुद को बेहतर ढंग से समझने और अपने विचारों व मतों को व्यक्त करने के लिए आवश्यक आत्मविश्वास बनाने में मदद करते हैं।

भारत में आदिवासी छात्रों के सामने चुनौतियाँ

गरीबी आदिवासी शिक्षा के लिए सबसे बड़ी बाधा बनी हुई है। कई आदिवासी परिवारों के लिए रोजमर्रा की बुनियादी जरूरतें पूरी करना भी मुश्किल होता है, जिससे बच्चों को खेती-बाड़ी, जंगल से उपज इकट्ठा

करने या दूसरे कामों के जरिए घर की आमदनी में मदद करनी पड़ती है। इस आर्थिक दबाव के कारण शिक्षा और जीवन-यापन के बीच सीधा टकराव होता है, जिसका नतीजा यह होता है कि बच्चे स्कूल कम जा पाते हैं, बीच में ही पढ़ाई छोड़ देते हैं और पढ़ाई के अलावा व्यक्तित्व विकास की गतिविधियों में बहुत कम शामिल हो पाते हैं। शिक्षा की अपॉर्चुनिटी कॉस्ट (यानी पढ़ाई के कारण छूटने वाली मजदूरी और आमदनी) अक्सर उससे मिलने वाले फायदों से ज्यादा भारी पड़ती है, खासकर तब जब शिक्षा का नतीजा बेहतर आर्थिक मौकों के रूप में नहीं दिखता। पैसों की कमी के कारण उन्हें सीखने के अतिरिक्त साधन, टेक्नोलॉजी और ऐसे प्रोग्राम भी नहीं मिल पाते जो मिडिल-क्लास छात्रों को आसानी से उपलब्ध होते हैं। आमतौर पर आदिवासी छात्रों के पास किताबें, कंप्यूटर, इंटरनेट कनेक्शन और ऐसी दूसरी चीजें नहीं होतीं जो उनके व्यक्तित्व के व्यापक विकास में मदद कर सकें। आदिवासी छात्रों को कई जटिल और आपस में जुड़ी चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, जैसे गरीबी, भाषा की बाधाएं, अपनी संस्कृति से कटाव, बुनियादी सुविधाओं की कमी और सर्वांगीण विकास के मौकों का अभाव। शिक्षा के पारंपरिक तरीकों ने, भले ही वे उपयोगी रहे हों, छात्रों के संपूर्ण सशक्तिकरण के लिए जरूरी व्यक्तित्व विकास के पहलुओं पर पर्याप्त ध्यान नहीं दिया है।

छात्रों के लिए व्यक्तित्व विकास क्यों महत्वपूर्ण

शैक्षणिक ज्ञान आवश्यक होने के साथ-साथ, आत्मविश्वास, अनुकूलनशीलता और संचार कौशल जैसे व्यक्तिगत गुण भी उतने ही महत्वपूर्ण हैं। आत्मविश्वास उन सबसे महत्वपूर्ण गुणों में से एक है जिसे छात्र अपने स्कूली वर्षों के दौरान विकसित करते हैं। कक्षा में भागीदारी, प्रस्तुतियों (प्रेजेंटेशन), वाद-विवाद और प्रदर्शन के माध्यम से, छात्र बिना किसी डर के खुद को व्यक्त करना सीखते हैं। आत्मविश्वास छात्रों को सक्षम बनाता है: चर्चाओं में सक्रिय रूप से भाग लेना, विचार और मत साझा करना, एमच के डर को दूर करना, समूह गतिविधियों में पहल करना, समय के साथ, ये अनुभव छात्रों को अपनी क्षमताओं पर विश्वास करने और सकारात्मक मानसिकता के साथ चुनौतियों का सामना करने में मदद करते हैं।

शैक्षणिक सफलता और भविष्य के करियर के लिए मजबूत संचार कौशल आवश्यक हैं। स्कूल निम्नलिखित गतिविधियों के माध्यम से छात्रों को इन कौशलों को विकसित करने में मदद करते हैं: प्रस्तुतियाँ और सार्वजनिक भाषण, समूह चर्चा, एवाद-विवाद और कहानी सुनना/सुझाना, सहयोगात्मक परियोजनाएँ, सहपाठियों और शिक्षकों के साथ नियमित रूप से बातचीत करके, छात्र यह सीखते हैं कि अपने विचारों को स्पष्ट रूप से कैसे व्यक्त किया जाए और दूसरों को प्रभावी ढंग से कैसे सुना जाए। नेतृत्व का विकास व्यक्तित्व वृद्धि का एक महत्वपूर्ण पहलू है। कई स्कूल निम्नलिखित कार्यक्रमों और गतिविधियों के माध्यम से नेतृत्व को प्रोत्साहित करते हैं: ये अनुभव छात्रों को सिखाते हैं कि टीमों का मार्गदर्शन कैसे किया जाए, निर्णय कैसे लिए जाएँ और जिम्मेदारी कैसे उठाई जाए। स्कूल के दौरान विकसित नेतृत्व कौशल अक्सर जीवन भर मूल्यवान बने रहते हैं। भावनात्मक बुद्धिमत्ता दूसरों के साथ बातचीत करते समय अपनी भावनाओं को समझने और प्रबंधित करने की क्षमता को संदर्भित करती है।

स्कूल निम्नलिखित को प्रोत्साहित करके छात्रों में भावनात्मक बुद्धिमत्ता विकसित करने में मदद करते हैं जो छात्र भावनात्मक बुद्धिमत्ता विकसित करते हैं, वे संबंध बनाने और चुनौतियों से निपटने के लिए बेहतर ढंग से सुसज्जित होते हैं। स्कूली माहौल विभिन्न पृष्ठभूमियों और व्यक्तित्वों के छात्रों को एक साथ लाता है। दैनिक अंतःक्रियाओं के माध्यम से, छात्र महत्वपूर्ण सामाजिक कौशल सीखते हैं। ये अनुभव छात्रों को सामाजिक रूप से आत्मविश्वासी व्यक्ति बनने में मदद करते हैं। रचनात्मक गतिविधियाँ छात्रों को अपने विचारों और भावनाओं को अनूठे तरीकों से व्यक्त करने की अनुमति देती हैं। छात्रों को उनकी कल्पना का पता लगाने और उनकी रचनात्मक क्षमताओं में आत्मविश्वास विकसित करने में मदद करते हैं। रचनात्मकता समस्या-समाधान और नवीन सोच को भी बढ़ाती है। व्यक्तित्व विकास छात्रों को उच्च शिक्षा, पेशेवर करियर और व्यक्तिगत जीवन में आने वाली चुनौतियों के लिए तैयार करता है। स्कूल के दौरान विकसित कौशल, जैसे आत्मविश्वास, संचार, अनुकूलनशीलता और नेतृत्व, कृवास्तविक दुनिया की स्थितियों में अत्यधिक मूल्यवान हैं। जो छात्र मजबूत व्यक्तित्व विकसित करते हैं, वे अक्सर पहल करने और अवसरों का लाभ उठाने के लिए बेहतर ढंग से तैयार होते हैं।

व्यक्तित्व विकास को बढ़ावा देने के मार्ग

आदिवासी विद्यार्थियों की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत से उन्हें दूर किए बिना उनके सर्वांगीण व्यक्तित्व विकास को बढ़ावा देने के लिए, कई लक्षित हस्तक्षेप (पदजमतअमदजपवदे) अत्यंत महत्वपूर्ण हैं।

- **सांस्कृतिक रूप से संवेदनशील मार्गदर्शन (मेंटरशिप):** शिक्षण संस्थानों को ऐसे मेंटरशिप कार्यक्रम लागू करने चाहिए जो स्वदेशी पहचान का सम्मान करते हुए सार्वजनिक भाषण (पब्लिक स्पीकिंग), भावनात्मक बुद्धिमत्ता और नेतृत्व जैसे सॉफ्ट स्किल्स को सक्रिय रूप से विकसित करें।
- **संचार और भाषा की बाधाओं को कम करना:** सेतु-भाषा (ब्रिज-भाषा) सहायता और आत्मविश्वास बढ़ाने वाली कार्यशालाएँ प्रदान करने से सामाजिक चिंता को दूर करने में मदद मिलती है, जिससे छात्रों को अपनी अंतर्निहित क्षमता को अधिक स्वतंत्र रूप से व्यक्त करने में सक्षम बनाया जा सके।
- **घर और स्कूल की साझेदारी को मजबूत करना:** अशिक्षित या अर्द्ध-साक्षर माता-पिता को अकादमिक ट्रेकिंग और प्रेरणा में सक्रिय भूमिका निभाने के लिए प्रोत्साहित करने से एक सुरक्षित और अत्यधिक प्रेरणादायक घरेलू वातावरण बनाने में मदद मिलती है।
- **अनुकूल और समावेशी तकनीकों का लाभ उठाना:** व्यक्तिगत डिजिटल टूल और एआई-संचालित अनुकूली शिक्षण प्लेटफार्मों का उपयोग करने से आदिवासी शिक्षार्थियों की अनूठी गति और पृष्ठभूमि के अनुरूप अनुकूलित जीवन कौशल प्रशिक्षण प्रदान किया जा सकता है।

व्यक्तित्व और चरित्र आपस में घनिष्ठ रूप से जुड़े हुए हैं। मजबूत चरित्र के बिना एक आत्मविश्वासी व्यक्तित्व अहंकार का कारण बन सकता है, जबकि संवाद करने की क्षमता के बिना अच्छा चरित्र किसी का ध्यान आकर्षित किए बिना रह सकता है। दोनों का संतुलित विकास यह सुनिश्चित करता है कि छात्रों के पास न केवल कौशल और आत्मविश्वास हो, बल्कि वे उनका उपयोग नैतिक और जिम्मेदारी से भी करें। उदाहरण के लिए, जो छात्र स्पष्ट वक्ता और आत्मविश्वासी हैं लेकिन उसमें ईमानदारी की कमी है, वह अपनी क्षमताओं का दुरुपयोग कर सकता है। दूसरी ओर, मजबूत नैतिक मूल्यों और प्रभावी संचार कौशल वाला छात्र दूसरों के लिए एक आदर्श बन सकता है। इसलिए, शिक्षा का उद्देश्य समग्र विकास होना चाहिए जो व्यक्तित्व संवर्धन और चरित्र निर्माण दोनों को एकीकृत करे।

एक छात्र के जीवन में व्यक्तित्व विकास का महत्व

- **आत्मविश्वास का निर्माण:** व्यक्तित्व विकास से छात्रों में आत्मविश्वास बढ़ता है, जिससे वे बिना किसी डर के मंच पर बोल सकते हैं, अपनी राय रख सकते हैं और नई चुनौतियों का सामना कर सकते हैं।
- **प्रभावी संचार कौशल:** यह छात्रों को अपने विचारों को स्पष्ट रूप से व्यक्त करने और दूसरों को प्रभावी ढंग से सुनने में सक्षम बनाता है, जो शैक्षणिक और व्यावसायिक सफलता दोनों के लिए आवश्यक है। बसे पहले, यह छात्रों को खुद को बेहतर ढंग से व्यक्त करने में मदद करता है। यह लिखित और मौखिक दोनों प्रकार के संचार में उपयोगी हो सकता है, क्योंकि छात्र अपने विचारों और अवधारणाओं को स्पष्ट रूप से संप्रेषित करने में सक्षम होंगे। इसके अतिरिक्त, यह छात्र को दूसरों से बेहतर ढंग से जुड़ना सीखने में मदद कर सकता है। यह व्यक्तिगत और पेशेवर दोनों ही स्थितियों में फायदेमंद हो सकता है, क्योंकि छात्र दूसरों के साथ अधिक मजबूत संबंध बनाने में सक्षम होंगे। अंत में, व्यक्तित्व विकास एक छात्र को अपनी भावनाओं को बेहतर ढंग से प्रबंधित करना सीखने में मदद कर सकता है। इससे छात्र कठिन परिस्थितियों को अधिक प्रभावी ढंग से संभाल सकेंगे।
- **नेतृत्व और सामाजिक कौशल:** इसके माध्यम से छात्र टीम वर्क, सहयोग और नेतृत्व करना सीखते हैं, जिससे वे विभिन्न पृष्ठभूमियों के लोगों के साथ आसानी से तालमेल बिठा पाते हैं।
- **भावनात्मक:** यह छात्रों को अपनी भावनाओं को समझने, प्रबंधित करने और दूसरों के प्रति सहानुभूति विकसित करने में मदद करता है।
- **भविष्य की चुनौतियों के लिए तैयारी:** एक मजबूत और सकारात्मक व्यक्तित्व छात्रों को वास्तविक जीवन की कठिनाइयों, दबाव और असफलताओं का सामना लचीलेपन और आशावाद के साथ करने के लिए तैयार करता है।

निष्कर्ष

आदिवासी परिवार विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास की मजबूत आधारशिला होते हैं। वे बच्चों में ईमानदारी, जिम्मेदारी, सहयोग, साहस तथा प्रकृति के प्रति सम्मान जैसे महत्वपूर्ण मूल्यों का विकास करते हैं। उचित शैक्षिक अवसरों और सामाजिक सहयोग के माध्यम से आदिवासी विद्यार्थी आत्मविश्वासी, कुशल और जिम्मेदार नागरिक बन सकते हैं, जो अपनी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को सुरक्षित रखते हुए समाज के विकास में सकारात्मक योगदान देते हैं। एक उत्कृष्ट व्यक्तित्व का निर्माण मूल्यों, अनुभवों, संचार, आत्मविश्वास और भावनात्मक शक्ति के माध्यम से होता है। यह तब विकसित होता है जब छात्रों को परीक्षा में अच्छा प्रदर्शन करने के लिए ही नहीं, बल्कि जीवन को परिपक्वता और साहस के साथ संभालने के लिए अंदर से बढ़ने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है।

सुझाव

आदिवासी विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास को सुदृढ़ बनाने के लिए शैक्षिक सुविधाओं में सुधार किया जाना चाहिए, छात्रवृत्तियाँ प्रदान की जानी चाहिए तथा उन्हें खेल, सांस्कृतिक और सह-पाठ्यक्रम गतिविधियों में सक्रिय रूप से भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। इसके साथ ही, उन्हें उचित करियर मार्गदर्शन और जीवन-कौशल का प्रशिक्षण भी उपलब्ध कराया जाना चाहिए। शिक्षकों को ऐसा समावेशी शिक्षण वातावरण तैयार करना चाहिए, जो आदिवासी संस्कृति और परंपराओं का सम्मान करे तथा विद्यार्थियों में आत्मविश्वास, नेतृत्व क्षमता और सकारात्मक व्यक्तित्व के विकास को बढ़ावा दे।

संदर्भ

1. जॉन, ओ. पी., रॉबिन्स, आर. डब्ल्यू., और परविन, एल. ए. (2008) हैंडबुक ऑफ पर्सनैलिटी: थ्योरी एंड रिसर्च। न्यूयॉर्क, NY: गिलफोर्ड पब्लिशर्स।
2. जेसी टी. एम. एवं ए. विजयानंद (2023). सामुदायिक-आधारित अधिगम पहलों के माध्यम से जनजातीय शिक्षा को सुदृढ़ बनाना। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एडवांस्ड रिसर्च (International Journal of Advanced Research), 11(09), 1003–1006 | ISSN: 2320–5407।
3. लॉरेंट, एच. (2008)। पर्सनैलिटी: हाउ टू बिल्ड इट। मैरीलैंड, MD: वाइल्डसाइड प्रेस LLC--- पर्सनैलिटी विद रेफरेंस टू ट्राइबल एंड नॉन-ट्राइबल कॉलेज स्टूडेंट्स" (जनजातीय और गैर-जनजातीय कॉलेज के छात्रों के संदर्भ में व्यक्तित्व), इंटरनेशनल जर्नल ऑफ इमर्जिंग टेक्नोलॉजीज एंड इनोवेटिव रिसर्च (www.jetir.org, ISSN: 2349-5162, वॉल्यूम 7, अंक 11, पृष्ठ संख्या 963-968, नवंबर 2020
4. कुमार, के., और सिंह, आर. (2021). भारत में डिजिटल समावेशन और आदिवासी शिक्षा: चुनौतियाँ और अवसर। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एजुकेशनल डेवलपमेंट, 82, 102377.